मैं जंगली हूं

लेखक:
रमेश शर्मा

मैं जंगली हूं

लेखक:
रमेश शर्मा

मैं जंगली हूँ

लेखक:

रमेश चन्द्र शर्मा

प्रकाशक:

अभिव्यक्ति प्रकाशन

37/20, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

लेखक के सम्बन्ध में दो शब्द

सम्पूर्ण देश में रमेश भाई के नाम से पुकारे जाने वाले श्री रमेशचन्द्र शर्मा उन सभी के चहेते हैं जो इन्हें दिल से प्यार करते हैं, जिन्होंने इन्हें अपने दिलों में बिठा रखा है। रमेश शर्मा एक व्यवहार कुशल साथी हैं, इसीलिए वे उन सभी को अपना बना लेते हैं और उनके बन जाते हैं जो भी इनके सम्पर्क में, सान्निध्य में आ जाते हैं।

श्री रमेश शर्मा युवावस्था से लेकर आज तक देश में ही नहीं वरन् विदेशों में भी महात्मा गांधी के विचारों का प्रचार करने के उद्देश्य को लेकर भ्रमण करते रहते हैं। अगर मैं हिसाब लगाने लगूं तो लगेगा कि सालभर में मुश्किल से दो-तीन महीने ही वे अपने परिवार में रह पाते हैं। गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली से जुड़कर रमेश भाई सम्पूर्ण समय गांधी विचार प्रचार के लिए ही लगाते हैं।

श्री रमेश शर्मा की भावनाऐं जहां समाज सेवा से बंधी हुई हैं, वहीं वे स्वयं को राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत पाते हैं, ऐसी भावना ही जमीनी हकीकत है। यही कारण है कि आपने जिन कविताओं को इस पुस्तक के माध्यम से रखा है वे बहुत ही सरल, सहज और स्वाभाविक हैं जो उन्हें जन सामान्य और जनजीवन से जोड़ने का सफल प्रयास कह सकते हैं। आपने जनमानस में जागृति उत्पन्न करने के उद्देश्य से रचनाऐं की हैं जो समाज हित में उपयोगी सिद्ध होंगी।

आज के भौतिकवादी युग में, उपयोगितावादी दृष्टिकोण के चलते हुए भी वे हर प्रकार के आडम्बर और दिखावे से बहुत दूर दिखाई देते हैं। एक कुशल कर्मयोगी कार्यकर्ता के रूप में स्वयं को स्थापित करने वाले बन्धु रमेश शर्मा गोष्ठियों, शिविरों, सम्मेलनों, और बैठकों में अपनी बात बड़ी ही निडरता, बेवाकी और पारदर्शिता के साथ रखकर सभी का दिल जीतने की कला रखते हैं। यही कारण है कि जो एक बार इनसे मिल लेता है वह हमेशा के लिए इन्हीं कर होकर रह जाता है।

मैंने कविता के प्रति इनके रूझान को देखते हुए इन्हें इस ओर कदम आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया तो इन्होंने इसे आत्मसात करते हुए उस दिशा में कदम आगे बढ़ाया तो उसका प्रतिफल यह पुस्तक आपके सामने है। मैं जंगली हूँ भी उसी प्रेरणा की कोशिश का नतीजा है। भाई रमेश शर्मा की अब तक बारह-चौदह पुस्तकें प्रकाशिक हो चुकी हैं। उसी कड़ी में यह पुस्तक भी जुड़ रही है। मैं उनके प्रयासों को साधूवाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि वे इसी प्रकार अपना सृजन कार्य करते रहें।

—बाबूलाल दोषी

अपनी बात

मुझे प्रारम्भ से ही लोगों के साथ वार्तालाप करने, संवाद करने में अत्यंत आनन्द का अनुभव होता है, इसलिए लोगों से सम्बन्ध स्थापित करने में मेरा यही माध्यम रहा है। वैसे भी मैं सम्पूर्ण देश में गांधी विचार प्रचार में घूमता रहता हूँ, इसलिए संवादवार्ता से ही अपनी बात लोगों तक पहुँचाने में लगा हुआ हूँ।

जहाँ तक कविता लेखन का प्रश्न है मेरी उस ओर कोई अधिक रूचि नहीं थी क्योंकि मैं तो सारे देश में कार्यकर्ताओं आदि से सम्पर्क स्थापित करने हेतु पत्र-लेखन से ही अपनी उद्देश्य पूर्ति कर लिया करता था क्योंकि मुझे उसमें आनन्द भी आता था और सुख का अनुभव भी होता था।

यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि कविताऐं लिखने के पीछे तो एक प्रेरणा ही रही है। क्योंकि हर कृति भी किसी न किसी की प्रेरणा का श्रोत रहती है। मेरे लेखन का श्रेय तो सर्वप्रथम उन्हीं को जाना चाहिए क्योंकि न वे कहते, न दबाव बनाते, न प्रेरणा देते और न मैं लिखता।

प्रारम्भिक समय में कभी कुछ कविताऐं लिखी भी मगर न जाने वे सब कहाँ और कैसे गुम हो गईं। लेकिन मेरे बड़े भाई, वरिष्ठ पत्रकार, कवि और लेखक श्री बाबूलाल दोषी जी को इसका भान था, इसलिए उन्होंने मुझे पुनः इस दिशा में लेखन करने के लिए प्रेरित किया। बस यही मानिए कि उनकी प्रेरणा, प्यार, आशीर्वाद ने मुझे अपनी कलम चलाना फिर से शुरू करवा दिया और यह पुष्पगुच्छ तैयार हो गया जो आपके करकमलों में है।

श्री दोषी जी के असीम प्यार, प्रेरणा से ही इस पुस्तक का प्रकाशन सं. भव हो पाया है, मैं उसके लिए उनका आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही साथ अभिव्यक्ति प्रकाशन का भी हृदय से आभार प्रदर्शित करना मेरा नैतिक दायित्व है जिसने मेरी रचनाओं को एक पुस्तक के रूप में पाठकों के समक्ष रखा।

पाठकों के मन में पुस्तक के प्रति अगर थोड़ी सी भी सद्भावना जगी तो मैं स्वयं को अति सौभाग्यशाली मानूंगा।

आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में।

लेखक

रमेश चन्द शर्मा

विषय सूची

क्र.सं.	कविता	पृष्ठ सं.
1.	जंगली हूँ	1
2.	यह कैसी आजादी है	3
3.	दर्द अनमोल खजाना	5
4.	गांधी का सपना गांव बने गणराज्य	6
5.	बूंद	8
6.	अरण्य संस्कृति अपनाओ	9
7.	नवदर्शनम्	10
8.	अगर पेड़ लगाएंगे	11
9.	सवेरा लेकर आना	12
10.	खेजड़ली का बलिदान	13
11.	दीप	14
12.	दीपावली	15
13.	राम और अली	16
14.	होली	17
15.	समझो होली है	18
16.	निवृत्ति-प्रवृत्ति	20
17.	शब्द/रिश्ता जीवन का जोड़	24
18.	राज-राज-राज	25
19.	कविता से उपजी कविता	26
20.	हादसा	28
21.	बेबस जनता	29
22.	तरुणों की पुकार	31
23.	जवानी	32
24.	सारा जहां हमारा	33
25.	गौरैया-चिरैया	34
26.	नन्हीं दुनिया	35

जंगली हूँ

जंगल में रहता हूं, झोपड़ी में सोता हूं
धरा पर कमाता हूं, जरूरत जितना खाता हूं
थोड़े में हो मेरा गुजारा, क्योंकि मैं जंगली हूं।

नदी मेरी आन है, पहाड़ मेरी शान है
जंगल मेरी जान है, मनुज की पहचान है
इसी पर जीवन वारा, क्योंकि मैं जंगली हूं।

नदी, पहाड़ जंगल में डेरा, भरा जीवन मस्ती से मेरा
आखर नहीं जानता, खूब जीवन पहचानता
बहे मुक्त ज्ञान की धारा, क्योंकि मैं जंगली हूं।

शोषक नहीं बनूंगा, रह जाऊं चाहे भूखा
नहीं चाहे धुंआ वाली कार, न चेन वाला कुत्ता
पशु-पक्षी मेरा सहारा, क्योंकि मैं जंगली हूं।

मांगू नहीं सुविधा की बाड़ी, प्यारे मुझे पेड़-पौधे-झाड़ी
देख मुझे और भी जागे, उपभोक्तावाद दूर-दूर से भागे
नहीं मानता गडरिये का इशारा, क्योंकि मैं जंगली हूं।

मेरी अपनी यादें हैं, मेरी अपनी बातें हैं
मेरा अपना सपना है, इसके लिए खपना है
त्याग, तप, प्रेम ने तारा क्योंकि मैं जंगली हूं।

मुंह एक, दो हैं हाथ, सुख, संतोष मेरे साथ
करूं संयम से व्यवहार, दुनिया सारी मेरा परिवार
जीवन मेरा न्यारा है, सरल और प्यारा है
क्योंकि मैं जंगली हूं।

नहीं प्रदूषण में रह पाता, दिल शहर से घबराता
पेड़ पाल हरियाली लाता, पर्यावरण को मैं बचाता
काम है यह बड़ा प्यारा, क्योंकि मैं जंगली हूं।

अक्षर ब्रह्म से गहरा नाता, मुझे खूब ज्ञान भाता
सीधा है प्रकृति से नाता, मेरी पावन धरती माता
मैं इसका हूं राज दुलारा, क्योंकि मैं जंगली हूं।।

यह कैसी आजादी है

यह कैसी आज़ादी है, यह किसकी आज़ादी है
दूल्हे राजा बाहर मंडप के, बेगानों की शादी है।

प्रेम-करुणा का ताना-बाना, त्याग-तपस्या का ताना-बाना,
सत्य-सत्याग्रह का ताना-बाना, सादगी-बलिदान का ताना-बाना,
आजादी का ताना बाना, बदनाम हुई वह खादी है।
यह कैसी आज़ादी है।।

बंद बोतल में पानी बिकता, कभी कीमत आंकी है,
दूध थैली में मिलता देखो, जीवन अभी भी बाकी है,
आबे रुदे गंगा-यमुना सुखा दी, शराब की नदी बहादी है।
यह कैसी आज़ादी है।।

दो तिहाई जनता भूखी, एक तिहाई की चांदी है,
एक तिहाई राजा-रानी, दो तिहाई बांदी है,
गज, सिंह सब लुप्त हो रहे, भेडियों की बढ़ी आबादी है।
यह कैसी आज़ादी है।।

दुःख हमारा, उनका सुख, रोटी उनकी, हमारी भूख,
हमारी मेहनत उनका दाम, पसीना हमारा उनका आराम,
लोक भूल गये, गांव भूल गए, संस्कारों की बर्बादी है।
यह कैसी आज़ादी है।।

नेता-अफसर लूटे खाये, स्विस बैंक में जमा कराये,
घर में भूले सब आचार, जनता घर बैठी लाचार,
खुला घूमें भ्रष्टाचार, नकद उन्हें, हमें उधार।
यह कैसी आज़ादी है।।

शिक्षा-स्वास्थ्य बना है धंधा, शासन बन बैठा है अंधा,
सहारा बनी खड़ी सरकार, बढ़ रहा खुला व्यभिचार,
लूट-लूट कर जो खाये, बड़ा वही नेता बन जाये।
यह कैसी आज़ादी है।।

न्यायपालिका चल नहीं पाती, विधायिका उलटे कानून बनाती,
कार्यपालिका का काम तमाम, ऊंचे हो रहे उनके धाम,
उनके नीचे हरदम लारी, जनता की गर्दन पर आरी।
यह कैसी आज़ादी है।।

विकास के नाम घोटाला, जनहित के नाम घोटाला,
खेल-खेल में हो घोटाला, सच्चाई का कर मुंह काला,
हमारी तराजू उनके बाट, उनकी नींद हमारी खाट।
यह कैसी आज़ादी है।।

धरती माता, भारत माता, घर-घर में बैठी है माता,
यत्र नारी पूज्यते रमन्ते तत्र देवता, का जाप भाता,
कन्या की भ्रूण हत्या रुक नहीं पाती है।
यह कैसी आज़ादी है।।

दर्द अनमोल खजाना

दर्द में क्या तेरा-मेरा, दर्द तो दर्द है
कभी रुलाता, कभी खूब हंसाता
कभी कोने में पड़ा पीला जर्द है। दर्द तो दर्द है।

दर्द कभी चुप रहता, कभी खूब गाता है
कहीं दर्द का ज्वलंत शोर, कहीं दर्द एकदम मौन
कभी दर्द खुद को ही सहलाता है। दर्द कभी खूब गाता है।

बने, न बने बात, दर्दे दिल कहानी बनाता है
पहले खूब लगी आश, अब कुछ नहीं बचा पास
क्यों दर पर मेरे तू धक्के खाता है। दर्दे दिल कहानी बनाता है।

दर्द अपनाओ उसे गले लगाओ, दर्द अपना है खास
अपने भी छोड़ देते साथ, कोई न पकड़े अपने हाथ
तब दर्द जगाये मीठी आश। दर्द अपना है खास।।

दर्द को जब भी पहचाना, दर्द को अपना ही माना
दर्द ने दी हमें भिक्षा, जीवन जीने की शिक्षा
पास मेरे दर्द का अनमोल खजाना। दर्द को अपना ही माना।

दर्द को जिया है, दर्द ही जानकर
अब है दुआ, आप करे दवा
दर्द को दर्द ही मानकर। दर्द जिया है दर्द जानकर।।

—●—

गांधी का सपना-गांव बने गणराज्य

पंचायती राज पर हो रहा, दिल्ली में संवाद,
गांव स्मृति में घूमता, पंचायत आई याद,
पंचायत आई याद, समझ में यह नहीं आया,
पंचायत परिसंवाद, महानगर में क्यों बुलवाया।।

शहर खूब फल-फूल रहा,निकली गांव की सांस,
विकास गांव का थम गया, शहर फैला रहा विनाश,
शहर फैला रहा विनाश, गांव का शोषण है जारी,
शासन भी चला रहा, गांव की गर्दन पर आरी।।

झगड़े-झंझट दूर हों, गांव में फैले सुविचार,
गांव-गांव में उत्पादन हो, गांव बने नहीं बाज़ार,
गांव बने नहीं बाज़ार, उत्पादन काम सबके आए,
घर-घर फैले सुख, गांव का हर हाथ कमाए।।

समता, सौहार्द, बंधुता, सहभागी, सामाजिक न्याय,
हक सभी का बराबर है, मिले सभी को न्याय,
मिले सभी को न्याय, अब नहीं भेद रह पाए,
बैठ बरगद के नीचे, गौरी पंचायत चलाए।।

छुपा हुआ पंचायत में, पड़ौसी-धर्म का राज,
सब मिलकर पूरा करें, गांव के सारे काज,
गांव के सारे काज, महिला भी आगे आई,
सुख-दुःख कुछ भी होय, बराबर करें बटाई।।

गांव का अपना समाज है, गांव का अपना राज,
स्वावलम्बी योजना बनी, गांव का अपना ताज,
गांव का अपना ताज, मिलकर सब राज चलाएं,
ग्राम (गांव) सभा में बैठ, सभी कानून बनाएं।।

स्वाभिमान की हो साधना, जायगा स्वालम्बन जाग,
खेत-खलिहान फूले-फले, लहलहाएंगे बाग,
लहलहाएंगे बाग, धन-धान्य से भंडार भर जाएं,
गांव के जंगल, वन, चारागाह हरे हो जाएं।।

पानी से रहें लवालब, गांव के जोहड़-तालाब,
कुंए कुण्ड पानी से भरें, चेहरे पर लोगों के आब
चेहरे पर लोगों के आब, गांव गोकुल बन जाए,
बने गांव गणराज्य, सपना गांधी का सज जाए।।

बूंद

बूंद बड़ी मतवाली है, भरती धरती की प्याली है
एक जगह न जड़ जमाएं, उड़ती, चलती, बहती जाएं
पहुंचे जहां जीवन फैलाए, जीवन में हरियाली लाएं
बच्चे भीगें शोर मचाएं, पेड़-पौधे जीव-जंतु नहाएं
बूंद बने बहता पानी, जीवन की हुई शुरू कहानी
सागर से उठी बदली में आई, रूप बदल फूले न समाई
बदली छोड़ बूंद बन धाई, धरती मां ने गोद फैलाई
बूंदे मिलकर बन गया जल, नाच उठा नभ और थल
ऐसी सधी जल धारा, उद्‌गम नदी माता का प्यारा
नदी-नाले-पोखर भर जाएं, धरती मां की प्यास बुझाएं
धरती मां में बूंद समाई, भंडार की हुई खूब कमाई
जल से सच्चा बचत खाता, इसे बढ़ाती नदी माता
रखो सदा इसे आज़ाद, नहीं करो कभी बर्बाद
बिना इसके जीवन रूखा, धरती पर पड़ जाए सूखा
बचत खाता काम आए, जीव-जगत की जान बचाए
बूंद-बूंद से बनता पानी, छोटी बूंद की बड़ी कहानी।।

—●—

अरण्य संस्कृति अपनाओ

सबसे पहले पर्यावरण,
इसको लें हम जान,
हटे इससे हम तो,
खो देंगे पहचान,
खो देंगे पहचान,
बाद में पछतायेंगे,
साफ हवा के बिना,
सांस क्या ले पाएंगे।।

पर्यावरण समझ नहीं हमें आया,
दादा ने तब यूं समझाया,
पर्यावरण की सुन लो भाषा,
जीवन में जागेगी आशा,
सुनाऊं तुम्हें सच्ची परिभाषा।

प से लगी पेड़ की माला,
र् इस पर बैठा रखवाला,
या से याद करो तुम पानी,
व से वन की मीठी वाणी,
र से रंग हरा बढ़ाओ,
ण से अरण्य संस्कृति अपनाओ।।

नवदर्शनम

न से नया समाज बनाओ
व से वन सम्पदा बढ़ाओ
द से दर्शन जीवन में लाओ
र् से राग-द्वेष मिटाओ
श से शमन करो बुराई
न से नाम की करो कमाई
म से मेरे-तेरे का भेद भागे
नवदर्शनम जीवन जागे।।

अगर पेड़ लगायेंगे

सुनो सुनाये एक कहानी, दादा-नाना की जुबानी,
यह है पर्यावरण की वाणी, कभी न करना इससे मनमानी,
वरना सबको पछताना है
प्रदूषण फैला चारों ओर, नहीं नाचे जंगल में मोर,
बढ़ रहा तेजी से शोर, कौन करेगा इसका गौर,
सबको मिलकर कदम बढ़ाना है।
धोखा बड़ा खायेंगे, बार-बार पछतायेंगे
हाथ मलते रह जायेंगे, दुनिया को तड़पायेंगे
सभी को संभल जाना है
पर्यावरण बचाना है, हरा जंगल बनाना है
बादलों को लुभाना है, वर्षा को बुलाना है
खेत-खलिहान लहलहाना है
खूब पेड़ लगायेंगे, ताज़ी हवा, फूल-फल खायेंगे
छाया में बैठ पायेंगे, वर्षा में नहायेंगे
स्वस्थ समाज बनाना है।।

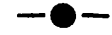

सवेरा लेकर आना

लगें पेड़, छाएंगे बादल, जगेगी नई आस
खेत-खलिहान, नदी-नालों की, खूब मिटेगी प्यास
खूब मिटेगी प्यास, कि सूखा नहीं पड़ेगा
हो पर्यावरण साफ, अपना देश बचेगा।

पर्यावरण रक्षा, अपनी रक्षा, इसको लें हम जान
जंगल-जंगल मोर नाचेंगे, फल-फूलों की शान
फल-फूलों की शान, खुशहाल देश बनेगा
भूखा रहे न कोई, सबको धन-धान्य मिलेगा।

पांवों पर अपने करें, हम पक्का विश्वास
साफ हवा में तभी, ले सकते हैं सांस
ले सकते हैं सांस, बात बस इतनी मानें
सुबह सैर के साथ, चलना दिन में भी जानें।

देख बादल सावन के, नाचे नहीं मन मोर
कोयल की कूह-कूह दबी, बढ़ गया इतना शोर
बढ़ गया इतना शोर, बाग-बगीचे बच नहीं पाऐं
छोड़ अपना घर-बार, अब हम कहां पर जाऐं।

सारे वन उजड़ गये, सभी रहे कराह
कोई किसी की भी, नहीं सुन रहा है आह
नहीं सुन रहा है आह, समय यह कैसा आया
बना मनुज को आज, भगवान स्वयं पछताया।

क्यों हो मन निराश, जवानी शूर है
जगी आश-विश्वास, दिन नहीं दूर है
दिन नहीं दूर है, बसेरा ले कर आना
पर्यावरण रक्षा में, अपना चित्त लगाना।।

—●—

खेजड़ली का बलिदान

खेजड़ली की इस धरती पर, बचे न कैसे हरियाली
कटें हैं सर अनेकों, नहीं कटने दी नीली डाली।
करी घोषणा अमृता देवी ने, सबने यह प्रण पाला
भादों सुदी दशमी को, नया इतिहास रचा डाला
माता-पिता, बेटा-बेटी, बहू सभी ने कसम खाई
363 सर कलम करवा, शहीद हुए आन बचाई।
तलवारों के वार सहे, धरती पर लाली छागी
देखे सर न्यौछावर होते, दुम दबा सेना भागी
संदेश मिला राजा को, खेजड़ली की जनता मस्तानी
बनाया इतिहास उन लोगों ने, जो थे स्वाभिमानी।
पले रुख (पेड़), अभय हिरण हो यह परम्परा निराली
प्रेरणा लें इतिहास से, तभी बचेगी हरियाली
कोना-कोना हरा रहेगा, ब्यार बहेगी निराली
हो पर्यावरण की रक्षा, सबने वह कसम उठाली।
नाचें-गाएं पशु-पक्षी भी, पानी बदली भर चाली
जल सहज मिला सभी को, जीवन की हुई बहाली
भरे रहेंगे खेत-खलिहान, चारों ओर खुशहाली
सुंदर वन उपवन, फूल-फलों से लदी डाली-डाली।
बीस-नौ नियमों की परम्परा, गुरु जाम्भेश्वर ने डाली
बिश्नोई की बात अनोखी, जनता है हिम्मत वाली
छूटेगा उसका पिंड नहीं, डाले हिरण पर नजर काली
बलिदान आज फिर मांग रही, यह धरती धौरा वाली।।

—●—

दीप

दीवाली है दीप जलाओ,
दीप जलाओ अंधकार भगाओ।

अज्ञान की बढ़ती परछांई,
अंधकार ले रहा अंगड़ाई।

द्वेष, नफरत जोर लगाये,
गरीबी अपना जाल फैलाये।

भूमण्डलीकरण ने मति मारी,
धंधे चौपट बढ़ी बेकारी।

जातपात का मिटा न कोढ़,
साम्प्रदायिकता की हो रही घुड़दोड़

राष्ट्र बने, मानव जागे,
समाज सुदृढ़, बुराई भागे।

समस्याओं का अंधकार भगायें,
दीवाली पर ऐसे दीप जलायें।।

दीपावली

दीपावली दीपों का खेल,
मिठाई का मीठा मेल।

छटा पटाखों की न्यारी,
लगे दीपावली प्यारी-प्यारी।

दीप जलाओ, खुशी मनाओ,
सोच-समझकर पटाखे चलाओ।

मिलकर सब मिठाई खाओ,
घर-घर में दीपावली मनाओ।

दीपावली सफाई का त्यौहार,
बांटो मिलकर सबसे प्यार।

अच्छे बनें हमारे संस्कार,
हम हैं इसके लिए तैयार।।

राम और अली

दीवाली में अली रमा, रमजान में राम
मिलकर फिर क्यों नहीं, कर सकते हम काम
कर सकते हम काम, हिन्दू-मुस्लिम दो आंखें
भारत-पाकिस्तान, एक पेड़ की दो सांखें।

मर रहे लड़-लड़कर, भूल गए पहचान
लड़ने-मरने में ही, समझ रहे हम शान
समझ रहे हम शान, अभी तक यह न जाना
राम-रहीम, कृष्ण-करीम का एक ही ठिकाना।

दुनिया एक है अपनी, इंसानियत है जात
खोजें बड़ी-बड़ी हुई, समझे न छोटी-सी बात
समझे न छोटी-सी बात, मिलकर जोर लगाओ
भूख, दुःख, घृणा, द्वेष मिटाओ।

सच्चा धर्म है यही, मिलकर जियो साथ
प्रेम, सौहार्द, समन्वय बिना, आएगा न कुछ भी हाथ
आएगा न कुछ भी हाथ, दीवाली-ईद साथ मनाओ
दुःख दर्द हो समाप्त, नया संदेश अपनाओ।

हमने ऐसा किया अगर, नहीं रहेगा दोष
खुशी दुनिया में फैलेगी, मिटेगा आक्रोश
मिटेगा आक्रोश, जन्म सफल बनाएं
हो दुःख किसी का, जीवन से दूर भगाएं।।

—❀—

होली

खेल रहे बच्चे होली, रंग पानी-कीचड़ साथ
क्या बात करें जवानों की, बूढ़े भी भांज रहे हैं हाथ
बूढ़े भी भांज रहे हैं हाथ, मची है बृज में होली
गौरी मारे लट्ठ, झूमे दीवानों की टोली।

रंग जितने धरती पर, देखो उनको आज
खिल-खिल पड़े सभी, सजा रहे हैं ताज
सजा रहे हैं ताज, गढ़ रहे नई कहानी
बुढ़हू ताऊ को भी चढ़ी है, आज नई जवानी।

बूढ़े-बड़े, महिला-पुरुष, सब पर चढ़ रहा रंग
कहीं ठंडाई घुट रही, कहीं छन रही भंग
कहीं छन रही भंग, नाचे मन मोर
पहले प्याले भर-भर पी गए, अब मचा रहे हैं शोर।

होली मात्र रंग ही नहीं, जीवन का त्यौहार
रंग लो जी भर मन को, बांट-बांट कर प्यार
बांट-बांट कर प्यार, फाल्गुन में नाचो-गाओ
फूली खेतों में सरसों, हर आंगन में फाग रचाओ।

खेत-खलिहान फूले-फले, फसलों का त्यौहार
ढोल-नगारे-ढप बज रहे, गाएं सभी मल्हार
गाएं सभी मल्हार, आई दीवानों की टोली
रहा न कोई भेद, मची ऐसी होली

चुनरी-चोली के साथ में, रंग गए हैं अंग
होली हम ऐसी खेलेंगे, मन मीत के संग
मन मीत के संग, ऐसा रंग छा जाए
पक्का चढ़ा रंग, जीवन भर उतर न पाए।।

—●—

समझो होली है।

पतझड़ अपना रंग दिखाए
पेड़ कोपलों से भर जाए
नजारा मद मस्ती फैलाए,
तो समझो होली है।

सेमल फूलों से लद जाए
पलास टेसू अपना रंग बरसाए
सब कुछ रंगीन नजर आए
वनस्पति पर जवानी छाए,
तो समझो होली है।

जब नाचने लगे मन मोर
संगीत फैला हो चारों ओर
ढोलक-ढप का आए दौर,
तो समझो होली है।

बृज-बरसाना मद मस्ताए
पिटकर भी आदमी मुस्काए
औरत खुशी से लट्ठ बरसाए,
तो समझो होली है।

ठण्डाई छन-छन जाए
मस्ती अपना रंग दिखाए
सभी रिश्ते भूल जाए,
तो समझो होली है।

भोला भी बन जाए भूत
सबको मिले रंगने की छूट
कोई किसी से रहा नहीं रूठ,
तो समझो होली है।

घर-घर में गुजिया महक फैलाए
गुलाल गालों पर लगने को मचलाए
सब कुछ जवान नजर आए,
तो समझो होली है।

ठण्डाई पीएं और गुजिया खाएं
फाग गाकर खुशी मनाएं
फागुन जब सबको बौराए,
तो समझो होली है।

दोस्त दुश्मन का भेद मिट जाए
सभी अपने मित्र बन जाए
सबको मन से गले लगाए,
तो समझो होली है।

जहाँ खरा है न कोई खोटा
न बड़ा है न कोई छोटा
सब रंग रहे एक दूजे को,
तो समझो होली है।

निवृति-प्रवृति

मेरी निवृति को खबर नहीं बनाना
नहीं उसका कार्यक्रम मनाना,
उसमें वाह-वाह करके
याद नहीं दिलाना कि मैं सठिया गया हूँ।
विदाई के नाम पर
बुढ़ापा याद दिला रहे हो
कह रहे हो,
हो गया निक्कमा, बेकार
काम का नहीं रहा
जवानी काटी साथ तुम्हारे
बुढ़ापे की दहलीज पर आते ही
दरवाजा दिखा रहे हो
नियम कानून की याद दिला रहे हो।
बड़ी-बड़ी बातें
परिवार, नया समाज
सब कथनी में ही है बस
चाहते हो अच्छी-अच्छी बातें सुनूं,
जाते समय जो नहीं हूँ वो भी बनूं
स्वस्थ को ही निकाल रहे हो,
जीते जी मार रहे हो
शायद तुम परमात्मा बन गए,
अधिकार की बू से दब गए

सत्ता का अहंकार आ गया है,
दुनिया का दांव छा गया है।
कहां है वह नया समाज
परिवार, रिश्ते, मानव का राज
जिसे बार-बार कहते नहीं थकते,
जाप की तरह रहे रटते
अच्छे-अच्छे मीठे-मीठे,
निवृति पर एक शब्द तो सच कहो
सहारे जिसके उस समाज तक जा सकूं
देखा नहीं जिसे समीप से
जरूर वहां जाना है
लौटकर फिर यहां नहीं आना है
सीता की तरह दे रहे हो बनवास
या कर रहे हो तड़ीपार
समझ नहीं पा रहा हूं
निवृति पर कही बातें
फिर भी मैं जा रहा हूं
आप चाहते हैं क्या?
आप स्वयं जानते हैं
जो बोल रहे हैं सन्दर्भ उसका पहचानते हैं
जीवन में जो कहा उसे मानते हैं
उसे अपने जीवन में उतारा है
या अपने को हरदम नकारा है
किशन शब्द नहीं जानता
गागर में सागर भर गया
गांधी को घोट कर पी गया
गांधी ने कहा

"मेरा जीवन ही मेरा संदेश है"
किशन ने कहा
"जैसा मैं जिया ऐसे सब जिएं"
ईमानदारी से काम कर अमृत पिएं
इंसान बनो।
सामर्थ्य, सत्ता, पैसा, साधन के समय
हम हनुमान बन जाते हैं
शब्दों में हम जामवंत है
सभी कुछ है हमारे पास
आते हैं किसी के काम
शब्द कहने को नहीं
जीने, करने को होते हैं
इस पर विचारें
शब्द बुनते हो?
जब तक शब्द नहीं जिएंगे
इसी तरह जहर के घूंट पिएंगे
परिवार, रिश्ते मरने पर भी टूटते नहीं
परिवार, रिश्ते बनाओ
उन्हें सहजता से निभाओ।
विदाई करनी है करो
बेटी की तरह बसाकर नई दुनिया
एक नया जीवन भरो
तब हम समझ पाएंगे जीवन का राज
शब्द जीवित है जान जाएंगे
फिर परिवार बनेंगे
नई-नई जगह बसेंगे
सब मिलकर रहेंगे

कल नया बनाएंगे
विदाई का भी आनन्द मनाएंगे
मोड़ पर जगा रहा हूं
अब भी जागो
सत्य से मत भागो।
सत्य कड़वा है फिर भी अपनाओ
जीवन की निवृति को समझो, समझाओ
निवृति जीवन में होगी एक बार
तब जीवन की नैया होगी उस पार
शेष निवृति नहीं, एक मोड़ है
काम को बदलने का एक तोड़ है
अब निवृति की छोड़
प्रवृति को जान ले
प्रकृति अपनी पहचान ले
बने यह जीवन की धारा
प्रकृति, प्रवृति, निवृति का मेल न्यारा
इसी पर सब कुछ वारा
साध्य-साधन की शुद्धता बचाओ
इंसान बनो, इंसान बनाओ।।

—●—

शब्द/रिश्ता जीवन का जोड़

रिश्ता जीवन का जोड़ है, शब्द का बड़ा कमाल
जग से मुक्ति सरल है, शब्द को जीत न पाए काल
शब्द को जीत न पाए काल, गजब यह लगे जमाना
दुनिया आनी-जानी, शब्द का पक्का ठिकाना।

शब्द बड़ा सशक्त है, शब्द का अपना ताज
शब्द ने इतिहास के, बदले अनेकों राज
बदले अनेकों राज, शब्द है, है अजय भारत
हुई थोड़ी सी चूक, हो गया महाभारत।

शब्द तीखे तीर है, संभल-संभल कर दाग
न जाने किस शब्द पर, भड़क जाएगी आग
भड़क जाएगी आग, इज्जत दाव पर लग जाए
जुबान किले में बंद, खोपड़ी जूते खाए।

धार बड़ी है शब्द की, करे गम्भीर घाव
जाने किस शब्द पर, आ जायेगा ताव
आ जायेगा ताव, शामत खड़ी हो जाए
रिस्ता जीवन का जोड़, पल में खुल जाए....

शब्द की अपनी महिमा है, शब्द की शक्ति अपार
शब्द के रचनाकार ने, जीत लिया संसार
जीत लिया संसार, सभी को अपना बनाया
रहा न कोई गैर, शब्द संसार बसाया।

पुरखों ने जो शब्द रचे, बढ़ा सभी का मान
उन शब्दों को खर्च कर, पाला हमने अभिमान
पाला हमने अभिमान, शब्द के नये अर्थ बनाओ
पुरखों की कमाई को, कुछ तो आगे बढ़ाओ।।

—●—

राज-राज-राज

आदमी से आदमी को लड़ाए, उगले आग डंडे चलवाए
नफरत, द्वेष, घृणा फैलाए, मराठी मानुस को ढ़ाल बनाए
राज पाने की माने यह युक्ति, जमानत से पाई राज ने मुक्ति।

एक राज ऐसा भी भाई, खुले आम हुई जहां पिटाई
हालात को यह समझ न पाया, राज ने राज से हाथ मिलाया
पुलिस-प्रशासन करे जाप, महाराष्ट्र हमारा माई-बाप।

प्रतिशोध पहुंचा बिहार, नौजवान आपे से बाहर
सम्पत्ति लूटी, रेल जलाई, बात पकड़ में यह नहीं आई
किसको किसने सबक सिखाया, कोई राज हाथ न आया।

राज पास और राज है दूर, राज बिना नेता मजबूर
इसको समझ ले जनता आली, तब मने सच्ची दीवाली
नफरत-घृणा-द्वेष मिटाओ, हर दिल में प्रेम-दीप जलाओ।

भारत माता को और न बांटो, कोई तो रोको, कोई तो डांटो
एक है माटी, एक है देश, दीपावली का यह संदेश
दीपावली है दीप जलाओ, दीप जला अंधकार मिटाओ।।

—●—

कविता से उपजी कविता

कविता–तीन शब्द चित्र
मेरी बेटी, मेरी चुनौती, मेरी रचना
व्यूह में फंसा, बेड़ियां जकड़ा
युवा भी रखता अभिलाषा
वर्तमान का अहसास होड़ बढ़ाता
मगर सोच आदर्श की याद दिलाती
और खोज का प्रतिबिम्ब
काश मात्र महत्वाकांक्षा न होती
तो दाग से बच जाते
भाव में भी हिम्मत न हारते
जब चक्र सही दिशा में घूमता
पुनःनिर्माण में इंसान झूमता
इधर स्थिति मानव भी नहीं रहने देती
चिंता नहीं
प्रतीक ले, मिशाल कायम कर ढूढेंगे विकल्प
लेंगे संकल्प
क्षितिज की ओर बढ़ते नन्हें कदम
बनाए रखेंगे हौसला, चिंता नहीं समाचार जगत की
नारी:तीन शब्द चित्र
रचना जारी रखें लड़की, औरत, माँ
तब और अब आकांक्षाएं, परिवर्तन
जीवन–बहस में बदलाव का जतन पदचिन्ह है
मगर न जोश, न प्रेरणा, न सृजन

बच्चे संदेश का निमंत्रण पाकर
मां: दो शब्द चित्र बनाकर हंसते
औरत करती ताज की रचना
दर्शन का वृक्षारोपण नवांकुर बन पलता
मेरी कविता का सफर मुझे याद आता है
प्रेम भरा चेहरा बेटियां ही रखती हैं
भ्रष्टाचार
लड़की, बड़ी होती लड़कियां नहीं फैलाती
अन्तर अन्तस प्रदूषण गहराया है
शीर्षक-विहीन, अविश्वास
जो भावना, दृष्टिकोण लाया है
उससे दंगे भड़क रहे हैं
मुखौटे भाई चारा को छल रहे हैं
और मैं ठगा सा कुछ नया आरम्भ करना चाहता हूं
आंगन से छुटपन, क्षणिकाएं, संकुचन घटाता हूं
इससे अभयदीप अनहोनी को मिटाएगा
सत्य, गांधी सच्ची शिक्षा को बढ़ाएगा
कश्मीर के शिकारे में बैठी वह लड़की, कवि बन
पूर्णमासी का चांद सी कविता
शब्दौपहार भेंटकर सपने सजा रही है।।

—●—

हादसा

सरकार आज जाग रही है
प्रशासन सतर्कता बरत रहा है
पुलिस कड़ी कारवाई कर रही है
एक हलचल सी मच रही है,
नेंताओं के आ रहे हैं आश्वासन
अफसर बड़ी कारवाई का बना रहे हैं मन
पुलिस मुस्तैदी से कर रही है आह्वान
सरकार बचा रही है अपनी जान
जरूर कहीं कोई हादसा हुआ है
किसी की मौत, अपहरण या खात्मा हुआ है
फिर आपदा आई है कहीं या हुआ है विस्फोट,
कुछ मरे होंगे, कुछ गम्भीर, कुछ को लगी होगी गम्भीर चोट
क्योंकि तभी खुलती है, कुछ दिन के लिए सरकार की नींद
प्रशासन बरतता है सतर्कता, पुलिस पकड़ती है जींद,
हादसे के कुछ दिन बाद तक मचती है दौड़-भाग
सर्तकता, कड़ी कारवाई के साथ मिटाए जाते हैं हादसे के दाग
मिलते हैं बड़े-बड़े आश्वासन, बैठाई जाती है जांच
भुला दिया जाता है सब, किसी पर भी आती नहीं आंच
जब तक नहीं टूटेगा आम आदमी का यह भ्रम
तब तक चलेगा इन घटनाओं, हादसों का यह क्रम
यह क्रम जब तक चलेगा
आम आदमी को यूं ही छलेगा

—●—

बेबस जनता

बे-बस ये दिल्ली की जनता
बस के पीछे दौड़ रही है
बस गैस के साथ
सवारी भी छोड़ रही है
लोग लपकते-झपटते हैं
कुछ हाथ लगा तो लटकते हैं
जिसका जहां हाथ पड़ रहा है
मार रहा है पकड़ रहा है
किसी ने किसी को उधर रगड़ा
जुम्मेदार नहीं गया पकड़ा
दिल्ली में चल रहा है ये ही लटका
सरकार-न्यायालय ने "दिया झटका"
फोड़ा जनता का मटका
बस की छत पर भी बैठे हैं लोग
न्यायालय को लगा है प्रदूषण का रोग
सरकार को नहीं करेंगे माफ
दिल्ली के फेफड़े रखेंगे साफ
जनता कमाये कैसे रोटी-रोज़गार
नहीं इससे हमारा कोई सरोकार
हमने तो पर्यावरण बचाने की कसम खाई है
दिल्ली से डीजल की सभी बसें हटाई हैं
बताओ जनता रोज़गार पर कैसे जाएगी

यह तो दिल्ली सरकार ही बताएगी
जनता ने दो दिन से रोटी नहीं खाई
न्यायालय के क्षेत्र में ये नहीं आता भाई
हमें फेफड़ों की चिंता है, पेट तो नगर में सभी भरते हैं
दमे से नहीं मरने देंगे, भूख से तो लोग सालों से मरते हैं
मित्र हमने प्रदूषण पर खूब सोचा विचारा
मगर भूख कभी नहीं रहा विषय हमारा।।

तरुणों की पुकार

अपने दो हाथों की ताकत, उठ इन्सान पहचान,
किसी के आगे हाथ फैलाए, यह तेरा अपमान।

भूल गया क्यों अपनी ताकत, उठ तू आगे आ,
मुश्किलों से टकरा कर, उन पर विजय तू पा,
भगा अन्धेरा जब तू जागा, बढ़ा तेरा सम्मान।

तरुणाई हिम्मत कर आगे आई, मिला तभी किनारा,
ऐसे ही वीरों ने बनाया, भारत को विश्व सितारा,
वही देश फिर मांग रहा, तरुणाई से बलिदान।

मानवता को सदा तूने, आगे बढ़ अपनाया,
भय, क्रोध, लालच, स्वार्थ को, तूने ही ठुकराया,
आज फिर क्यों भूल रहा, है तू अपनी आन।

तूफानों को तूने आगे, बढ़ चढ़ कर चूमा,
मुसीबतों में भी तू, मस्त बनकर झूमा,
आज फिर क्यों तू इसे, ना माने अपनी शान।।

—●—

जवानी

अपनी खपाकर भी जान, जो रखता है सबका ध्यान
राष्ट्र का बचाए मान, जवानी इसको कहते हैं।

तूफानों से जो खेले, कष्टों को हंसकर झेले
मौजों के लगाये मेले, जवानी इसको कहते हैं।

जीना जिसको आता है, अन्याय सह नहीं पाता है
समस्याओं से टकराता है, जवानी इसको कहते हैं।

रोतों को हंसाती है, नया संसार बसाती है
सपने नये दिखाती है, जवानी इसको कहते हैं।

संकटों को खुद सहती है, दुःख देख भी हंसती है
बनती एक हस्ती है, जवानी इसको कहते हैं।

रचना जिसका खेल है, दुनिया में बढ़ाती मेल है
बुझते दीपों का जो तेल है, जवानी इसको कहते हैं।

जीवन को जो जीता है, पर दुखों को पीता है
आदर्श जिसकी गीता है, जवानी इसको कहते हैं।

आज़ादी की दीवानी, चाल भरी है मस्तानी
हर कदम बनें एक कहानी, जवानी इसको कहते हैं।।

—●—

सारा जहां हमारा

सारा जहाँ हमारा, हम हैं सारे जहाँ के,
प्यारा ब्रह्माण्ड कितना, नन्हीं दुनिया है सितारा-सितारा।

अपनाएं सत्य को हम, करुणा, प्रेम को बढ़ाएं,
दुःख दूर करना सबका, मकसद है हमारा-हमारा।

हम खेलें-कूदें-गाएं, आगे-आगे बढ़ते जाएं
सीखा जीवन जीना, यह कर्तव्य है हमारा-हमारा।

नन्हीं दुनिया में हैं आए, नई रोशनी हम लाएं,
अध्यात्म-विज्ञान का मेल, मार्ग है हमारा-हमारा।

व्यक्ति-प्रकृति एक हो, शोषण-भय भगाएं,
स्वानुशासन जागा, है विकास यह हमारा-हमारा...

सेवा ही मेवा है, जीवन में यह बस जाए,
हम खाएं त्याग से, विश्व बना परिवार हमारा-हमारा।।

गोरैया-चिरैया

आंगन का गौरव गोरैया,
चीं-चीं करती फुदके चिरैया,
पास बैठती, छलांग लगाती,
चीं-चीं करती गाती जाती,
जरा हिलो तो डर जाती,
थोड़ी देर में फिर लौट आती,
देखो इसका कितना प्यार,
थाली में खाने को तैयार,
घर-बार का अपना हिस्सा,
खत्म हो रहा है यह किस्सा,
यह बचेगी, हम बचेंगे,
घर आंगन चीं-चीं से खिलेंगे
बच्चे साथ खेलेंगे भाई,
सच्ची होगी यह कमाई,
साथ जीने की कलाकारी,
गोरैया, चिरैया हिस्सा हमारी।।

नन्हीं-दुनिया

निर्मल, निर्भय, निश्छल, सच्चे,
भोले-भोले दिल के अच्छे।

खेलें-कूदें शोर मचायें,
भागें-दौड़ें गले लगायें।

हंसते गाते प्यारे-प्यारे,
खिले फूल से न्यारे-न्यारे।

राजा-रानी राज दुलारे,
जीतें हरदम, कभी न हारें।

नाजुक-नम्र हिये के अच्छे,
ऐसे होते प्यारे बच्चे।

प्यारी लगती भारत माता,
हम खुद अपने भाग्य विधाता।

हम नफरत का भांडा फोड़ेंगें,
ऐसी सब दीवारें तोड़ेंगे।

आगे बढ़ते जाएंगे,
नहीं कभी घबराएंगे।

हमको सपना ऐसा आए,
दुःख न कोई दुनिया में पाए।

आओ नन्हें मुन्ने-मुनिया,
बच्चों की यह नन्हीं दुनिया।।

लेखक का परिचय

रमेश शर्मा का जन्म गांव मंढ़ाणा, तहसील-नारनौल, जिला-महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में श्रीमती लक्ष्मीदेवी एवं श्री जयनारायण शाण्डिल्य के परिवार में हुआ।

छात्र काल से ही सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ी। प्राथमिक शिक्षा हरियाणा में हुई। छठी से दिल्ली में शिक्षा हुई। विद्यालय संसद में गृहमंत्री, रेडक्रास, स्काउट, भाषण, अंताक्षरी, खेल आदि गतिविधियों में भागीदारी की। दिल्ली विश्व विद्यालय में पढ़ते समय गांधी अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष, 'आत्मादर्पण', 'युवा कल्याण' पत्रिका के सम्पादक, विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी।

किशोर एवं तरुण शांति सेना, अकाल बनाम तरुण, अभियान, बिहार एवं बंगलादेश राहत कार्य, चम्बल घाटी बागी समर्पण, भारत जोड़ो अभियान, ग्रामकोष, ग्रामदान, ग्राम स्वराज्य एवं सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन, जे०पी० अमृतकोष में सक्रिय योगदान। गुजरात, दिल्ली, बिहार, असम, पंजाब, जम्मू कश्मीर, बोडो लैण्ड में शांति कार्यों में भागीदारी एवं युवाओं के दल ले जाना। अध्ययन दल, गोष्ठी कार्यशाला एवं शिविरों का आयोजन।

सिखों पर हुए अत्याचार के खिलाफ कार्य एवं उपवास, गांधीजी की 125वीं जयंती पर राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा का नेतृत्व, तिब्बत समर्थन यात्रा का आयोजन, बापू तुझे सलाम यात्रा में सहयोग, गांधी युवा बिरादरी के राष्ट्रीय संयोजक, गांधी विचार, मानवाधिकार, लोकतांत्रिक मूल्य, अध्यात्म निष्ठ, साम्प्रदायिक सौहार्द, सद्भावना, सर्वधर्म समभाव, समाज परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधन सुरक्षा-संवर्धन, पर्यावरण, युवा, बाल महिला आदि संगठनों, संस्थाओं, समूहों से सम्पर्क संवाद।

भारत के व्यापक भ्रमण के बाद अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको, थाईलैण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, भूटान, नेपाल का भी प्रवास।

लेखक की अन्य कृतियां एवं संकलन-आओ मिलकर गाएं, क्रांतिगान, जाग उठी तरुणाई, युवा गांधी जन मिलन, राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा, तिब्बत समर्थन यात्रा, अमेरिका प्रवास, जम्मू कश्मीर, अरुणोदय जरूर होगा, राष्ट्रीय युवा रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन, साइकिल यात्रा, अपना स्वास्थ्य अपने हाथ, जम्मू-कश्मीर उम्मीद की किरण, जमना खड़ी बाजार में मांगे सबसे खैर, सरहद पार की खुशबू।